2.4.6

2.4.6 नए कार्यक्रमों/अध्ययन के उभरते क्षेत्रों जैसे अनुसंधान पत्र, परियोजनाएं, परामर्श, प्रशिक्षण-अनुभव, धर्मशास्त्र, सांस्कृतिक पर्यटन, कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान, कम्प्यूटेशनल संस्कृत, अनुवाद अध्ययन, तुलनात्मक दर्शन, तुलनात्मक सौंदर्यशास्त्र, योग विज्ञान, योग दर्शन, के लिए संकाय उपलब्ध हैं। संस्कृत पत्रकारिता, संस्कृत पांडुलिपि विज्ञान, प्रबंधन, न्यायशास्त्र, मंदिर संस्कृति और प्रशासन, वास्तुशास्त्र, औषधीय ज्योतिष आदि।

Faculty are available for new programmes/ emerging areas of study such as Research papers, Projects, Consultancy, Prashikshan-Experience, Dharmashastra, Cultural Tourism, Computational linguistics, Computational Sanskrit, Translation Studies, Comparative Philosophy, Comparative Aesthetics, Yogic Science, Yoga Darshan, Samskrit Journalism, Sanskrit manuscriptology, Management, Jurisprudence, Temple Culture and Administration, Vastushastra, Medicinal Astrology etc.

संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय पारंपरिक शास्त्र अध्ययन के साथ-साथ उभरते क्षेत्रों के विषयों से भी अवगत है। विश्वविद्यालय में नवप्रवर्तकों के उभरते क्षेत्रों जैसे (शोधपत्र, परियोजनाएँ, परामर्श, प्रशिक्षण, अनुभव, धर्मशास्त्र, सांस्कृतिक पर्यटन, कम्प्यूटेशनल भाषा विज्ञान, कम्प्यूटेशनल संस्कृत, अनुवाद अध्ययन, तुलनात्मक दर्शन, तुलनात्मक सौंदर्य-शास्त्र, योग विज्ञान, योग दर्शन, संस्कृतपत्रकारिता, संस्कृत पाण्डुलिपि विज्ञान, प्रबंधन, न्यायशास्त्र और मंदिर संस्कृति और प्रशासन, भैषज्योतिषम्, वास्तुकला जैसे सभी विषयों को पढ़ाने के लिए संकाय उपलब्ध हैं।)

शोध पत्र- 'सरस्वती सुषमा' पत्रिका इसी विश्वविद्यालय से प्रकाशित होती है। इसमें पत्रिका विश्वविद्यालय और बाहर के विद्वानों के शोधपत्र प्रकाशित करती है। विश्वविद्यालय के कई वरिष्ठ और कनिष्ठ संकाय के शोध पत्र विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। इन शिक्षकों के लेख उत्कृष्ट है। यहाँ के शोध छात्रों के शोधपत्र भी प्रत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। विश्वविद्यालय में पाँच संकाय है। श्रमण विद्या संकाय में एक संकाय स्तरीय शोध पत्रिका प्रकाशित की जाती है। उस संकाय शोध पत्रिका में विश्वविद्यालय के सभी विभागों के छात्र शिक्षक अपने शोध पत्र लिखते और प्रकाशित करते है। यह पत्रिका वैज्ञानिक विषयों, आध्यात्मिक विषयों, दार्शनिक विषयों और मानवीय मूल्यों को शोधपत्रों के रूप में शामिल करती है।

परियोजना- उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अनुसंधान एवं विकास, योजना के अंतर्गत इस विश्वविद्यालय के डॉ० वेद विभाग के सहायकप्रोफेसर विजय कुमार शर्मा ने पाँच सूत्र और मातृलक्षण एक ट्युमदात्मक समीक्षा ? पर एक लघु शोध परियोजना स्वीकार की। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय अनुदान योजना के अन्तर्गत डॉ. मधुसूदन मिश्र, सहायक प्रोफेसर, ज्योतिषु विभाग 'अष्टदशी, प्रेजिक्ट को मंजूरी दी गई। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा की चौसठ कलाओं पर विशेष अध्ययन हेतु एक परियोजना स्वीकृत की गई है इस परियोजना में बीस से अधिक शिक्षक और छात प्राच्य ग्रन्थों में प्रस्तुत परियोजनाओं के माध्यम से समाज के लाभ के लिए चौसठ कला-विषयक तत्त्वों को संकलित करने में सक्रिय है।

परामर्श– इस विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग में एक 'ज्यातिष एवं वास्तु परामर्श केन्द्र' खोला गया है, जो लोगों को ज्योतिष के संदर्भ में परामर्श प्रदान करता है। यह प्रोजेक्ट ज्योतिष विभाग के शिक्षकों के निर्देशन में संचालित किया जा रहा है। यहाँ विभाग में परामर्श के लिए आने वालो के लिए विश्वविद्यालय द्वारा शुल्क निर्धारित है। रिसर्च कंसल्टेंसी में मिलने वाली फीस को तीन श्रेणियों में बाँटा गया है। सलाहकार शिक्षक को चालीस प्रतिशत (40%) भुगतान किया जाता है। चालीस प्रतिशत (40%)

विश्वविद्यालय पर और शेष बीस प्रतिशत (२०%) ज्योतिष विभागीय गतिविधियों पर खर्च किया जाता है। विभागों में शिक्षक न केवल शिक्षण देते हैं, बल्क छात्रों और उनके अभिभावकों को आवश्यक सलाह भी देते हैं। अक्सर विभाग से स्नातक करने वाले छात्र आजीविका कमाने के लिए अपने संबंधित शिक्षको से सलाह लेते हैं। वरिष्ठ शिक्षक विभाग के छात्रों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए कनिष्ठ शिक्षकों को सलाह भी देते हैं।

प्रशिक्षण अनुभव- अनुभव प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेष रूप से विश्वविद्यालय में शिक्षण और सीखने के साथ आयोजित किये गये थे, वे ही है। शिविरों के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत संभाषण का प्रशिक्षण दिया जाता है। शोध में पंजीकृत विद्यार्थिओं के लिए छह माह के पाठ्यक्रम हेतु एक विशेष प्रशिक्षण प्रदान करते है। विश्वविद्यालय भारतीयों और विदेशिओं को संस्कृत भाषा दक्षता और व्याकरण, अनुष्ठान, योग, धर्मशास्त्र और दर्शन के संदर्भ में विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए 'ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केन्द्र' के माध्यम से आधुनिक उपकरण प्रशिक्षण प्रदान करता है।

धर्मशास्त्र- विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र के अध्ययन और अध्यापन के लिए एक स्वतंत्र विभाग भी है। यह खंड सभी भारतीय अनुष्ठानों और हिन्दू संस्कृति को स्मृतियों के संदर्भ में विस्तार से सिखाता है जो भारतीय ज्ञान परम्परा में आवश्यक है। हालाँकि अन्य विभागों में धर्मशास्त्रीय विषयों को बिन्दुओं के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन यहाँ उनके व्यवहारिक पहलुओं को सीधे तरीके से पढ़ाया जाता है।

सांस्कृतिक पर्यटन- छात्रों के साथ-साथ शिक्षक भी अपने अनुभवों में ज्ञान बढ़ाने के लिए सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों का दौरा करते है, ताकि छात्रों और शिक्षकों को नये अनुभव और ज्ञान प्राप्त हो सकें।

कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान- कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान भी विषयों का अध्ययन और अध्यापन है। जैसा कंप्यूटर में एक बिंदु के स्पर्श से कई बिंदु प्रकट हो जाते हैं और कंप्यूटर के अनुसार व्याकरण में एक प्रत्यय टिप पर विचार करने पर एक साथ कई अर्थ उजागर होते हैं। उदाहरण के लिए- एक बिंदु के स्पर्श से Google chrome- संपर्क-जी-मेल

आदि का पता चलता है और लट् में तिप् प्रत्यय की चर्चा करने से विषय-क्रिया-भाव-दस्- संख्या का पता चलता है। आदि अर्थ प्रकट होते हैं। ऐसे में विद्यार्थियों को html, zawa आदि का ज्ञान भी आवश्यक है। विशेष रूप से शोध छात्रों के लिए कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

कम्प्यूटेशनल संस्कृत- यह विश्वविद्यालय संरक्षण अध्ययन के साथ-साथ संस्कृत अध्ययन पर भी ध्यान केंद्रित करता है, केंद्रीकृत करता है, हालाँकि शास्त्रीय कक्षा में संस्कृत के अध्ययन के साथ-साथ कंप्यूटर अनिवार्य कर दिया गया है। विश्वविद्यालय में संस्कृत के साथ-साथ कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए एक कंप्यूटर लैब भी स्थापित की गई है, जहां छात्र जाकर कंप्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। मोहित मिश्रा उनसे प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। श्री मोहित मिश्रा उन्हें कम्प्यूटर प्रशिक्षण देते हैं। भाषाओं में संस्कृत कंप्यूटर के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है, इसलिए विद्यार्थी एवं शिक्षक संस्कृत पढ़ाने के क्रम में गूगल आदि के माध्यम से संस्कृत सीखते हैं।

अनुवाद अध्ययन- इस विश्वविद्यालय के शिक्षक अनुवाद के अध्ययन के प्रति समर्पित हैं। विश्वविद्यालय के शिक्षक अनुवाद के अध्ययन के प्रति समर्पित हैं। विश्वविद्यालय अनुवाद-अध्ययन के लिए उचित रूप से संस्कृत कार्यशालाएँ और संस्कृत वार्तालाप शिविर आयोजित करता है। कुछ शिक्षक अपने घरों में घर पाठशाला नामक एक परियोजना भी चलाते हैं, जिसमें वे छात्रों को संस्कृत भाषा सिखाते हैं। विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक इसी क्षेत्र में काम करते हैं।

तुलनात्मक दर्शन- विश्वविद्यालय में तुलनात्मक दर्शन विभाग है। यहां विभाग सभी दर्शनों को तुलनात्मक अध्ययन पढाता है। इस विभाग में कई शोध छात्रों ने दर्शनशास्त्र का तुलनात्मक शोध भी किया।

तुलनात्मक सैंदर्यशास्त्र- यहां के छात्र दीनदयाल उपाध्याय कौशल केंद्र के माध्यम से घर की साज-सज्जा पर सौंदर्यशास्त्र का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार साहित्य विभाग

में साहित्यिक ग्रंथो का प्राकृतिक सौन्दर्य, पात्रों का पारस्परिक सौन्दर्य, परिधानों का सौन्दर्य आदि के आधार पर सौन्दर्यपरक तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

योग विज्ञान, योग दर्शन-दर्शनशास्त्र विभाग में ही योग दर्शन का भी औपचारिक अध्ययन और अध्यापन किया जाता है। योग दर्शन में दर्शाए गए साभी विषय जैसे योग की विशेषताएं, प्रकृति, फल, लाभ और हानि आदि इस विभाग में विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा पढ़ाए जाते हैं।

संस्कृत पत्रकारिता- इस विश्वविद्यालय द्वारा 'गांडीवम' नामक एक संस्कृत पत्रिका प्रकाशित की जाती है, जबकि पत्रकार के रूप में यहां के छात्र कुछ प्रतिष्ठित लोगों के लेख और उनके जीवन के अनुभव उनसे पूछकर प्रकाशित करते हैं। पत्रिका अभी भी संपादकीय प्रकाशित करती है। संस्कृत पांडुलिपि विज्ञान इस विश्वविद्यालय के पांडुलिपि हॉल में प्रचुर मात्रा में संस्कृत पांडुलिपियाँ उपलब्ध हैं। छात्र और शिक्षक अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए समय-समय पर पांडुलिपि की जांच करने और पढ़ाने के लिए मैनुअल लाइब्रेरी में जाते हैं।

प्रबन्धन- प्रबन्धन यह विश्वविद्यालय इस विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में अभ्यास भी प्रदान करता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्र ग्रंथ का विषय शामिल है। जो राजनीति एवं अर्थशास्त्र विभाग में पढ़ाया जाता है। वैदिक विभागीय पाठ्यक्रम न केवल जलप्रबंधन, बल्कि वन प्रबंधन पर भी विशेष चर्चा प्रदान करते हैं। साहित्य पर कर प्रबंधन भी पाठ्यक्रम का हिस्सा है।

यथा रघुवंशे-

उन्होंने लोगों के कल्याण के लिए उनसे प्रसाद स्वीकार किया सूरज अपने स्वाद को हजार गुना बढ़ाने का आदी है

कानून- विश्वविद्यालय औरिएंटल कानून, विशेषकर कानून का अध्ययन और अध्यापन कराता है।

मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति में इसकी व्यापक चर्चा है। याज्ञवल्क्य स्मृति के आचरण अध्याय में न्यायाधीश की योग्यताओं का वर्णन है। निर्धारण में कई कानूनी रूप से स्वीकृत सिद्धांत शामिल हैं जैसे अदालतों की प्रणाली। यदि इस बात पर भी चर्चा होती है कि यदि जज से कोई गलती से जाये तो उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। और इसी तरह समाज के संचालन हेतु स्मृतियों में स्थापित संवैधानिक व्यवस्था वास्तव में पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाई जाती है। मंदिर संस्कृति एवं प्रशासन विश्वविद्यालय परिसर में पंचदेव मन्दिर, वाग्देवी मंदिर आदि यहां दस से अधिक मंदिर हैं, जिनका प्रबंधन छात्रों और शिक्षकों द्वारा किया जाता है। मंदिर में स्थापित देवताओं की पूजा की संस्कृति शास्त्रों में वर्णित देवताओं के गुणों के अनुसार संचालित की जाती है। मंदिर में स्थापित वाणी की देवी के लिए नारी संस्कृति से युक्त मलहम लगाकर पूजा-अर्चना का अनुष्ठान किया जाता है। इस प्रकार गणेश और हनुमान की मूर्ति की पूजा सिन्दूर अभिषेक की संस्कृति के माध्यम से की जाती है और संबंधित देवता के लिए उपयुक्त पूजा व्यवस्था का प्रशासनिक कार्य भी यहाँ के छात्रों और शिक्षकों द्वारा किया जाता है। मंदिर के प्रशासन की मजबूत करने के लिए शिक्षकों द्वारा को मंदिर प्रशासकों के पद पर नियुक्त किया गया है।

भैषज्यज्योतिष- भैषज्यज्योतिष के सिद्धान्तों का पालन करते हुए पाणिनि भवन के पार्श्व में एक 'नवग्रह वाटिका' स्थापित किया गया है। वहां ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पौधे लगाए गए हैं। ज्योतिष पाठ्यक्रम में फसलों और अन्य जड़ी-बूटियों की बुआई और कटाई पर विशेष चर्चा होती है। शोध छात्र ज्योतिषीय ग्रहों का अध्ययन कर चिकित्सा विज्ञान पर भी शोध कर रहें हैं।

वास्तुशास्त्र- विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग में, दीनदयाल उपाध्यायकौशल केंद्र में एवं ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केन्द्र में वास्तुशास्त्र विषय का अध्ययन एवं अध्यापन होता है।